Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अश्विनीकुमार मिश्र

बांस काटनेवाले को तथा अन्य कविताएं

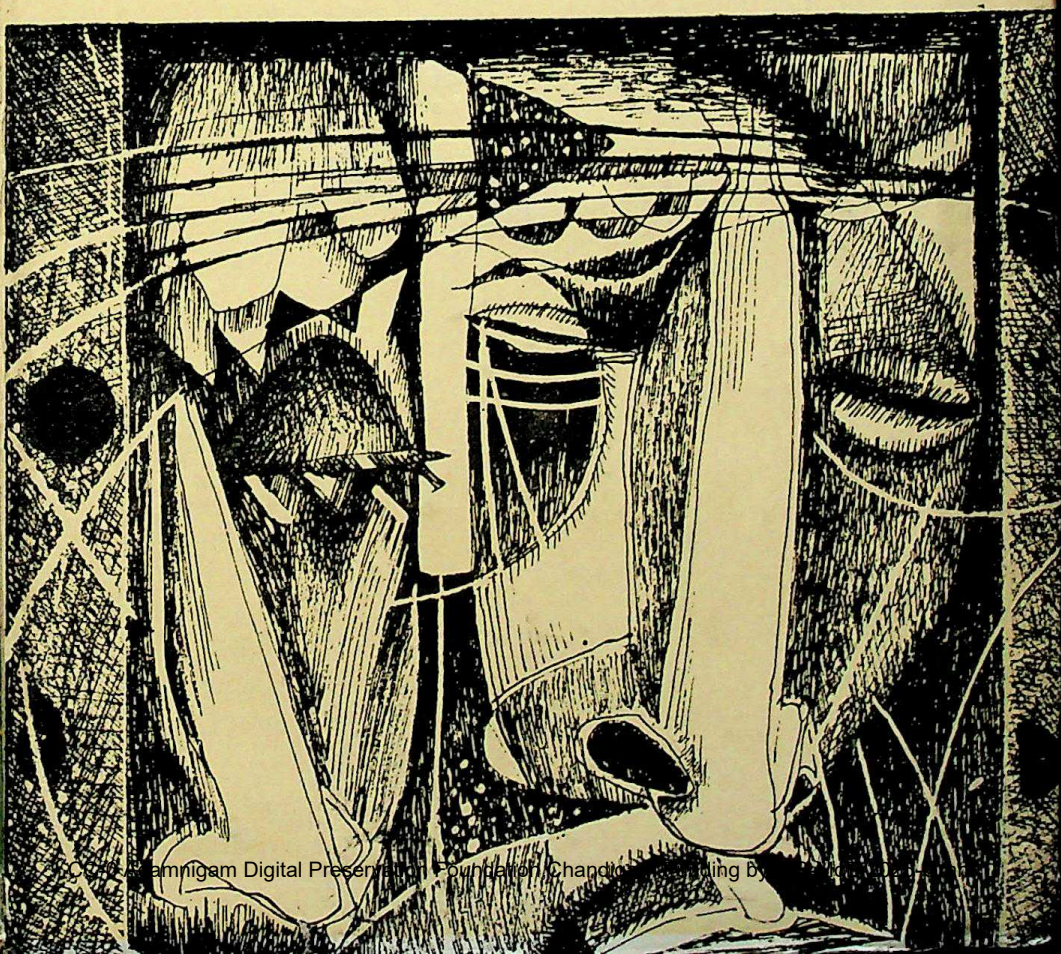

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

To
Usha Kaul
with regards
Jemini Kishor
26-11-2001.

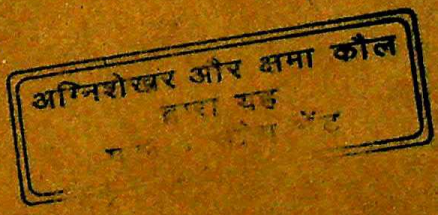

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांस काटनेवाले की तथा अन्य कविताएं

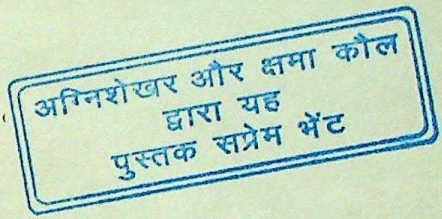

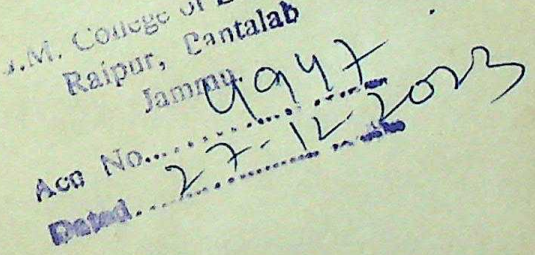

है कि महल के फोटो खींचने के लिए जब भी किसी प्रेस फोटोग्राफर ने प्रयास किया, उसे सुरक्षा गार्डों ने बन्दूक की नोंक पर दूर तक दौड़ा दिया। यदि कुछ गड़बड़ नहीं थी, तो बाहर से किसी महल का चित्र लिये जाने पर कोई आपत्ति ही क्यों होती ?

संगठन के
लेकिन उनका स
पहुंच पायी वह
तब उन्होंने मान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

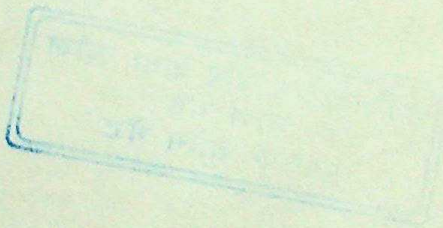

पराग प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांस काटनेवाले को
तथा
अन्य कविताएं

अश्विनीकुमार मिश्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उड़िया से हिन्दी रूपान्तरण

महेन्द्र शर्मा ☐ कुमार हसन ☐ लीना उद्‌गाता

© श्रीमती निरुपमा मिश्र

मूल्य : पैंतीस रुपये / प्रथम संस्करण, १९९३ / प्रकाशक : पराग प्रकाशन, ३/११४, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२/मुद्रक : कोणार्क प्रिंटर्स, दिल्ली-११००३२

BANS KATNEWALE KO TATHA ANYA KAVITAYEN
Ashwini Kumar Mishra Rs. 35.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी ओर से

इस काव्य पुस्तक के हिन्दी अनुवाद हेतु बहुत दिनों से मेरे मन में अभिप्सा थी। उसे साकार करने हेतु जिन्होंने अग्र पहल की, वे हिन्दी साहित्य के परिचित लेखक हैं श्री श्रीनिवास उद्‌गाता। श्री महेन्द्र शर्मा, श्री कुमार हसन, सुश्री लीना उद्‌गाता—इन सबने पांडुलिपि की प्रस्तुति में जो परिश्रम किया हे, मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

पराग प्रकाशन के संचालक श्री श्रीकृष्ण ने आग्रहपूर्वक इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन में जो रुचि ली, मेरे शब्द उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करने के लिए नाकाफी हैं।

मेरा श्रम सार्थक होगा, मुझे इसकी पूरी आशा है। हिन्दी के सुधि पाठकगण उड़िया से अनूदित इस हिन्दी काव्य-संग्रह का स्वागत करेंगे, इसका पूरा विश्वास है।

—अश्विनीकुमार मिश्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे कवि-जीवन के प्रथम प्रेरणा-स्रोत
पूज्य पिताश्री चंद्रशेखर मिश्र को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

अरण्य का चेहरा	९
आंटार्कटिका	११
देखवैयों को	१२
सांताक्रूज	१३
उपनगर	१५
वियोगावसान	१७
अंगीकार	१९
चार पात्र	२१
अधिकारी	२२
कविता	२४
बटोही के लिए चार कविताएं	२५
कुनमुन को	२८
बांस काटनेवाले को	३०
नींद	३३
कृष्ण पक्ष	३४
कृषक संगीत	३५
फिल्मी गीत	३७
माया त्रिवेणी	३९
डर जाने वाला आदमी	४२
तिथि	४३
कुंजवन	४४
बचपन	४५
बेटा	४७
अपसारण	४९
साक्षात के दिन	५०
गणतंत्र	५२
तुम्हारे लिए	५३

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांस काटनेवाले को तथा अन्य कविताएं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरण्य का चेहरा

मेरे आते समय सुनसान इस अरण्य में
नख और दांत बढ़ रहे थे लोमश जीवों के
अस्थि-मज्जागत था पाशविक प्रेम भी
उल्लुओं की चीख थी पेड़ों के कोटर में
विष-दांत निकलने लगे थे नागों के जबड़ों में
फेंकी जा रही थी छुरी चांदमारी पेड़ों की देहों पर
पत्थर के बने हथियारों में सज्जित हो
चल रही थी सेना, एक और दल
गोले-बारूद-तोप-कमानों से
भरपूर गोदामों के तोड़ कर ताले
गिन रहे थे शून्य की घड़ी के
बजने के सही समय को।
मोटे तौर से देखने पर जो लग रहा था
बारूद की गंध थी आकाश के हर एक कोने में
झिलमिला रहे थे अस्त्र सारे जालाक्षों में
दिख रहे थे जितने सारे छिपे हुए
लकड़बग्घे और बाघों के चेहरे
और नाक फटी जा रही थी अधजली
लाशों की बदबू से, इधर एक भेड़िये ने
जकड़ रखी है एक आंख, बम से छिटका एक
कुलिंगका पर जल रहा था, जब था सचराचर
विभीषिकामयी आग की चिनगारी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे आते समय इस जन अरण्य में
उन्मत्त थे ताण्डव नृत्य में नर खादकों का दल
बिखरे पड़े थे सभी घरेलू सामान
लोम सारे लोमश प्राणियों के, अत: उठ रही थी
भाप आमिष की त्रितल धरा में
बनैले कुत्ते के दांतों में थी कटर-मटर
हड्डी चबाने की तीखी आवाज
शोकातुर नारी एक फोड़ती थी चूड़ियां
नदी के घाट पर, मिट चुकी थी
ललाट से अरुणिमा, बालक एक गवांए बाप को
रो रहा था बिलख-बिलखकर, रंगीन कपास से
बनी एक राखी, जो खिसकती आती थी
बहन के हाथों से,
मिट जाने को बेमौसम बारिस से धुली
माटी कीचड़ में ।

मेरे आते समय इस जंगल का आद्योपान्त
ठीक था, सदियों से जड़ें फैली हुई थीं
माटी के नाभि-केन्द्र की काली गहराई तक
मेरी भी क्या ताकत है कि जड़ से उखाड़ लूं
उन महाद्रुमों को, इस बित्ते भर बपु से,
विष्फारित आंख लिये एकटक निहारूं
इस अभिप्राय की घंटी खाली बज रही है मेरे
मानस-मंदिर में
बढ़ रहे हैं हाथ-पैर अरण्य के
सुनाई दे रही है दहाड़ पशुओं की
दिनोंदिन प्रवल, प्रबलतर ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंटार्कटिका

शमी के कोटर से उल्लू के डकारते ही
हिंदुस्तान भर में फैल जाती है दूषित हवा
पर आंटार्कटिका···
मीलों लम्बी पैंगुइन की कतार
थाल-कटोरे, खाना और कुल्ली
सभी पर बर्फीला अभिषेक
गुच्छे भर रोयें से तन ढककर संवारे
पक्षियों के झुंड कान कर लेते हैं
करोड़ों युगों की विजनता को

न आह्लाद ला सकता है वापस
हिरोशिमा की हरियाली
न चमक आती है
अन्तर्महाजातीय बिगुल, शांति संधि की
चिंदियों से।

छः महीने तक सूरज नहीं लांघता
क्षितिज की दहलीज
धरती काला दूध पीकर फुलाती है पेट
दक्षिण गोलार्द्ध में शव, जुलूस है बिलकुल बंद
कुंभकरण के लौट आने के बाद
लाल-लाल झाग से भर जाती है प्राची दिशा
अट्टी पर दिखाई देती है सूरज की तपती जवानी
प्रेम के लिए थोड़ी-सी छाया तक नहीं मिलती
बाशिंदे परेशान होते हैं देखकर रोशनी का बिखराव।

स्कट का छोड़ा झंडा कब का फट चुका है
मिटा दिया है कब से पग-चिह्नों को
बर्फीले तूफान ने, बेचारा झंडे का
छिल चुका है कलेजा सर्दी और खांसी से
वैसे ही सोया रहा दिनों तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देख नहीं सका अपने खुद के फोटों को
पैंगुइन के बच्चों ने कर दिया पेशाब
उसके जिस्म तमाम पर···और
धरती के भूगोल पाठ में
उसकी महत्ता को याद नहीं कर पाया
छठी कक्षा में जो
फेल हुआ मेरा छोटा भाई।

इस विस्तीर्ण महादेश का तांबा पट्टा
है भी किसके पास
उसके पेट में हजारों फिट नीचे है
कच्चा सोना, अपरिष्कृत खनिज तेल
और न लौटने वाले रेगिस्तानी मुसाफिर की
बहिन के आंसू।
किस जाति के हिस्से में आएगी यह अविस्मृत माटी
आ आ···तू और मैं, दोनों लड़ पड़ें
जिसके बोए बीज सरसों के उगेंगे पहले
वही होगा हकदार
उस मही-मंडल का।
और दूसरा गांव के हाट से खरीदकर केले
चखाएगा पैंगुइन दल को
सिर्फ यही होगी उसकी जिम्मेवारी।

देखवैयों को

कहां सुनाई देती नहीं है तुकसान की रुलाई
या क्षताक्त आत्मा का निभृत विलाप
और अस्वाभाविक जीवन की करुण लहरें
छोड़ जाती हैं बूंद-बूंद आंसू के
क्रंदनशील इतिहास, जहां जलने के दृश्य नहीं होते,
सिर्फ संचारित हो जाता है जीवन निर्वापित सरहद को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काबू के अधीन, जहां होती नहीं गर्मी की तपिश
लहराती आती है चंदन-चर्चित शीतल हवा
ओढ़ा देने को ठंडे दिलासा के चद्दर से
जीवन की लहलहाती सब्ज शाखाओं को
जहां केवल जाज्वल्यमान शाश्वत जीवन की
वैभवमय तारा एक रह जाती है तोड़कर
काले चांद के हाथ-पैर, कहां झरता रहता है
सुतान का अविच्छिन्न धारा विवरण
कोयल के कंठ से, अमानुषिक व्याध के तीर से
मुक्त कर रक्ताक्त कपोत को
धरती के किस कवच में संचित है केवल
प्रीतिमय जीवन की अनुसृति,
यह जान पाता तो
आ जाता अगवानी के लिए उसके अमानवीय पथ को
अपने मानस-राज्य के स्वर्णाभ अवलोकन से
सहेजने-संवारने को उस कल्पित दिगंत को
मैं चाहता हूं जरूर बनने को उस पथ का
प्राथमिक पुरोधा, और कई कारण भी हैं
कि मैं बन जाऊं व्रतधारी उस उन्मेष की खोज का
क्योंकि एक नील तितली की भांति
टूटे पंख के खिंचाव में, किसी बारह साल के
बच्चे की गैस-चैंबर-सरीखे उंगली भींचे
मुट्ठी के अन्दर कांपते अनुच्छेद की तरह घुस आया हूं
मैं यहां छत्तीस साल की विकलांग जवानी लिये
किसी ऑक्टोपसीय शिकंजेदार काले गह्वर को।

सांताक्रूज

जीओफिजिक्स नहीं पढ़ी
न की है सवारी हवाई जहाज की
देखा नहीं है सांताक्रूज।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिछवाड़े कुएं के जल पर
प्लेन के उड़ जाने की परछाईं
गागर डुबाने की डुबडुबाहट में
डूब जाती, मिट जाती है
ऐन सुबह,
क्योंकि वह सांताक्रूज नहीं है।

न हवाई जहाज उतरता है
न कोई पैरासूटवाला
या कोई और पता पूछता है
राह का
मुझे नहीं मालूम
किस ओर से चढ़कर
कहां पेटी बांधते हैं
पीते क्या हैं
और किस भांति भिगोए रखती है
एयरहोस्टेस की तिरछी नजर।

सफेद कागज का बना खिलौना
हवाई जहाज
हाथ से उठाकर फेंक देने से
आवाज नहीं करता
न छोड़ता है धुआं
निर्भय हो उतर जाता है
घास के सब्ज हवाई अड्डे पर
वहां···हां···हां···वहां ही
है मेरे सपने का
सांताक्रूज।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपनगर

वहां सृजनशीलता के दस हजार सांचे हैं
कोई किसी से मेल नहीं खाता
खुद अवतरित हुई इस धरती का
कारण भी ढूंढ नहीं पाते
नींद से अभिभूत आयतन में
सपने देखते हैं
एक निष्कलंक साम्राज्य के।

तीन-चार एंबेसेडर कारें
सात-आठ रिक्शे
दस-बारह पान की दुकानें
रंगारंग धर्मस्थान
और गला फाड़कर गरजता सों-सों
एक राइसमील ही है
उस उपनगर का रक्त-प्रवाह
दिल और अंग-प्रत्यंग।

फॉरेस्टर के लिए चुना गया
अतनु साहू के स्पर्धित शरीर को
किसने नहीं देखा यहां
बूढ़े कांस्टेबिल की साइकिल की हवा
नहीं खोली किस नंबरी दागी के
लड़के के कच्चे हाथों ने।

सपना देखता है मिल के गेट पर संतरी
एयरफोर्स में भरती होने का
होटल बॉय···एक घड़ी पहनने का
एक दसवीं का छात्र
पक्षीराज घोड़े पर सवार हो
मिसीसिपी पार कर जाने का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहर के उपांत में आ पहुंचे हैं
मुख्य अतिथि
प्रतिनिधि कोई बढ़ जाता है
फूलमाला लेकर आए हैं
साठ गुरु विद्यार्थियों को उपदेश देने
चरित्र-निर्माण के संदर्भ पर ही
गुल हो जाती है बिजली
अंधेरे में ही उपदेशावली
लुटाते जाते हैं मुख्य अतिथि
भरी सभा के बीच ।

मुख्य अतिथि ढूंढ़ते फिरते हैं
स्थानीय पाक्षिक अखबार के पन्ने पर
अपनी तसवीर और बखान के विवरण
अस्पष्ट काले धब्बों के बीच
नाखुश बड़बड़ाते फेंक देते हैं पेपर को
दूर सेहुंड़ की
कचरेदार छांह में ।

उपनगर स्थापत्य कला की
तराशी हुई आबनूसी पत्थर की प्रतिमा है
स्कूल से लौटते राह पर दुपट्टा उड़ाकर
चुनने लगती हैं
सरकस, इन्द्रजाल के चमत्कार पैम्फलेट
प्रेमी चलते हैं इस संतुष्ट धरती के तरुण
नाचवालों की
हवा में फर-फर उड़ती रेशमी पोशाक को ।

घुटनों के ऊपर के एक्जिमा को
धोती से ढककर खाना परोसते हुए
रसोइए के घाव के
अचानक दिख जाने पर
किसी और दृश्य पर आग्रह ही
नहीं रहता उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थर-थर उंगलियों से
विदाई के साठ रुपये पकड़
नंगे पांव उतर आता है
कांव-कांव बच्चों की शोरगुल में
इस धरती की निर्गमन नली में
सूर्य-पराग उसका रहता है बरकरार ।

वियोगावसान

उसकी अपनी सर्जित चीज़ों को छोड़कर
जब उसने यात्रा की किसी और न लौटनेवाले मुल्क की
उसकी आंखों से सुनने को मिला नहीं
रोने-धोने की घड़ी का टप-टप अश्रुल बयान
इसलिए खुद की पीड़ा से वह कांपता था थर-थर
बेशुमार खून के बहाव से ठंडे पड़ते जा रहे थे
हाथ-पैर उसके,
यंत्रणाओं के शराघात से देह उसकी, आत्मा ने भी
जान-बूझकर मन नहीं किया और उसके अनाथ
बच्चों के आनेवाले दिन के उन सजल दृश्यों को
उसने शायद मुक्ति की इच्छा की अपने पति की
आसुरिक रमण-तृषा से,
उसकी नाक और गालों के उन सूजे दर्द को
छोटी बिटिया के टीपने के पल भर के बाद
जाने लगी वह अपनी राह; और अंधविश्वास से
उसके पति ने झाड़-फूंक करवाया उसके
बेजान तन का परिचित ओझा को बुलाकर ।

तभी अचानक, होश आया उसके पति को
नाच गये एक-एक कर दृश्य सारे उसके सामने
पत्नी के साथ मिलने की स्मृतियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम बरनी के क्षण मुकुट की आड़ में चुपचाप
रोती सूरत को।

अपने तन से पोंछकर धूल, मनमाफिक चीजें
दाल, भात, साग-सब्जी, कमर कसकर परोसती
पति को दे पाए तृप्ति, भरसक इसी प्रयास की,
त्याग की महिमा से मूर्तिमंत होकर शायद
हुई थी वह अवतरित इस धरती पर
शायद इसलिए उसने की इच्छा कि ले ले इम्तहान
थोड़ा-सा अपने रोपित सूक्ष्म अंखुओं के लिए।

उसकी अरथी के निकलने की अंतिम घड़ी में
सहेज कर मूढ़ पति के कंधे पर
रखी गयी अंगोछी, वही जिसे रोज साबुन से
धोकर उसने, साफ सफेद बनाए रखा था
जिनकी मांग, जंजालों के बोझ ढोए
छिल जाते थे हाथ-पैर मोटे तौर पर
उन सबके धारा विवरण के पश्चात
दैववाणी-सी गुंजरित हुई उसके पति के कानों में
एक महावाणी
अब तक तो सहती आयी बोझ मैं तुम्हारे
आज ही के लिए बस तुम ही सह लेना भार मेरा
जिस घर को आयी थी मैं एक दिन
बहू बनकर बढ़ी-चढ़ी आशाएं लेकर
उस ही घर से तुम ले चलो भी मुझे कंधे पर उठाए
इस गांव की सीमा पार समाधि में मग्न
टूटे छाज और हंडी माल माल हड्डियों के साथ
भूखी राख की तपिश
उसी में सीझती हुई अन्तिम शय्या को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंगीकार

सुवासित एक कपूर की माला
लहराती आ रही थी मेरे गले को
मुसकुराती विदाई वेला के
अन्तिम प्रतीक की भांति।
सम्मानास्पद मेरे सहकर्मियों के
भीगे भावावेग का उच्छ्वास लिये
झरता आ रहा था मौसम के आंचल से
स्वच्छ मंदाकिनी का निर्मल झरना
घुटने टेक रही थी सांझ की ठंडी लहर
अंधियारी हवा की तालियों के बीच

फिर से साथ-साथ तैरते आए दो पत्थर
मेरे मकान की छत पर
आज फिर से उन आलतू-फालतू बच्चों के
कच्चे मगज में जहर भर दिया है
उस गंवार टाउटर ने, इसलिए न
मेरी विदाई की घड़ी में
दोनों श्रद्धा और कुत्सा की बिगुल
मेरा छोटा-सा आंगन कान लगाए है
प्रेम और घृणा के एकाकार स्वर को।

मेरे घर की दीवार पर है तोहफे की
क्वाच घड़ी,
प्रीति मुग्ध स्मारकी का निभृत आलाप
फिर से दरार पड़ी छत से
टपकता है अनाविष्कृत झरना
मेरे अप्रिय प्रशासन का आग्नेय कवच
जाने-अनजाने की दोस्ती और दुश्मनी
इस तीन साल की परिचित भूमि पर।
मैं उठा रहा था अपने आंगन में पड़े
अपनी सहास्य संवर्धना के गुलदस्ते को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मेरी ओर निशाना साधे
फेंका गया शक्त पत्थर को।
दानवीय प्ररोचना
या
विभुमय संयोजना
मुसकान का मधुर सांगीतिक आलाप
या
रुक्ष अहंकारी दहाड़ से सहेजा प्रकोप
ईंट का टुकड़ा या फूलमाला।
दोनों घेर लेते हैं मुझे एक साथ,
मतवाले जीवन के प्रलुब्ध संगीत की तरह।

पत्नी ने कहा—चलो आगाह कर देते हैं
जिलापाल को यहां ठहरने की तकलीफों के बारे में।
जवाब में मैंने कहा—कुछेक पत्थर के टुकड़ों से कैसे
मुरझा सकती है मेरी पैंतीस साल की तरुणता।
पंजाब में उच्चाटित अंगीकार लिये
अट्ठावन साल का योद्धा रिवेरिओ
या कोई और आरक्षी पदातिक
इकलौते बेटे को बुलेट की शरशैया पर
लुढ़का कर अपने कर्तव्यबोध से
किस तरह अकुलाता है।

मैं रुक जाता हूं इंतजार में यहां
मासूम हरिजनों के दिमागी क्षितिज पर
समझौते का सूरज उग आने तक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चार पात्र

नर्स

खुद के बच्चे को जच्चाघर में
छोड़कर, दौड़ आयी है अस्पताल को
आसन्नप्रसवा नारियों की सेवा के लिए
गहने जेवरात की चोरी के डर से
भेज दिये हैं उसने पति के हाथों
उसकी सांवली देह पर
कंचे की कंठी के सिवाय
और क्या भी दिखाई दे !

अध्यापक

खुद के बेटे को छोड़ आया है
खेल के मैदान में, भेजा है बेटी को
महुए के जंगल को
पढ़ाई की माथापच्ची में बिलकुल न फंसकर
चिलबिलाती धूप में भटकते बड़के की खातिर
बहू लाकर रख छोड़ी है
उसके इकलौते कमरे के
कच्चे बरामदे की फटी चटाई पर से
बांट रहा है उजाला
ढेर-भर इल्म खरीदने वाले
ट्यूशन के बच्चों को ।

ड्राइवर

मन-माफिक घुमाने ले जा रहा है
मालिक के परिवार को
कितने दर्शनीय तीर्थस्थल, हरी वादियां,
देवालय और महानगर,
आदेश भर ही से चाभी घुमाते समय
कार के आईने में उभर आता है
दादी मां का चेहरा, मरते समय का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बेटा, अंत तक न मिलाया
जगन्नाथ से इस संसार में ।'

होटल ब्वाय

सभी हुक्म तामिल होने के बावजूद
अनगिनत गालियां
बरसती रहती हैं मालिक की
बाप-मां तक अछूते नहीं बच पाते
ढेरों मिठाई प्लेटों में परोसते
रहने पर भी किसी एक दिन
सुना नहीं है मालिक से कि
ले लो यह प्लेट तुम्हारा है ।

अधिकारी

गंभीर प्रकोष्ठ में
गंभीर ढंग से
सजा रखी है उन्होंने
अपनी आंखें, जीभ, नाक
और अन्यान्य प्रत्यंग
जूतों और कोट के पीछे
अत्यल्प बातों के शेषांश को
समझाने का दायित्व दूसरों का
सुन्दरियों के गहने
टूटे इसलिए कचहरी की कुर्सी
खाली रही दो घंटे
समस्या का विपुल हिसाबी
बखान हुआ, चिट्ठियां, फाइलें, बरामदे
हर जगह झांकने लगा उन टूटे गहनों का
एक विश्वसनीय चित्रपट ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मगज में
हिसाब-निकास का छोटा-सा इंजन
चतुराई के धुएं से क्रमाच्छन्न
किसे मोदित करेंगे किसे खोदित
धीरगामी यंत्र के लौहदण्ड में
तेल डालने वाले मुट्ठी भर लफ्फाजों ने
उठा रखा है छत्र जुबान से
जो जिज्ञासित होता है
अधिकारी की पदोन्नति
नहीं तो छोटे बेटे के अन्नप्राशन की तिथि
तिल तंडुलधारी किसी व्यक्ति विशेष की
तोड़ी-मरोड़ी जमीन में
गाड़ देते हैं सारे भविष्य को।
शिहरित कक्ष को
लापरवाह घड़ी के बेकार ढनढनाते
कंपाते समय
अधिकारी की हथेली डूबती जाती है
किसी हस्तरेखा विशारद की
धुंधली भविष्य गणना के
अतल जल में।

उबर कर आ जाते अधिकारी
स्वप्नाविष्ट गणना के अथाह जल भंवर से
बाल-बच्चे, पत्नी, सुरक्षित आवास, गाड़ी
और बेशुमार बच्चे के सुन्दर भविष्य से
अपने ही खून से सरजी चीजों की
संदिहान सुरक्षा के बाद
थोड़ा-सा नीचे फिसल जाने वाला
उनके व्यक्तित्व की
और होती नहीं सराहना
साधुता की रक्तिम आभा में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by MoS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

किसी दिन काफी देर से
लौटना पड़ा
दफ्तर के काम निपटा कर
बड़े साहब ने रोक लिया
काफी देर जलाकर बल्ब
अकारण नत्थियों में फंसे रहे।
लौटकर मन ही नहीं था
कि इतनी हैरानी के बाद
भला फिर से कुर्सी पर कोई
बैठ जाए
और करे तुम्हारा अर्चन ।

किसी और दिन फिर बिलंब से
लौटना पड़ा
दिन-ब-दिन उजलाते इस शहर के
किसी कूबरे नेता के संग
गुप्त मंत्रणा कर कि
वह जाएगा रोकने को
तबादला भुवनेश्वर को ।
लौटने में देर इतनी हुई कि
तुम सो गयी थीं रूठ कर, मुंह छिपाए
और मेरे चारों ओर
रिस रहे थे विपन्न क्षणों के
अजस्र रक्तस्राव ।

और किसी दिन
तुझे निहारते समय
तेरी भावमूर्ति पर चला कर छुरी
आहत करती थी मेरी पास बुक
किसी भांति बन जाए पचहत्तर हजार
कि ले आऊं चार पहिया एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उड़ चलूं घरवाली के साथ
आसपास रहने वाले लोगों को छोड़कर।
यह सच है कि तब तक
तू नहीं थी भावना में मेरी
हो सकता है कहीं
लोगों के बीच कह देगी खोलकर
सो आज तक
खरचता रहा हूं मैं
इतने सारे स्याही और कागज।

बटोही के लिए चार कविताएं

(१)

कब लौटे
छोटी भांजी की रुंआसी सूरत कितने पैसों में थमी
छोटी बहन रोई अगर मां से मिलने को तो
मना क्यों कर दिया
कितनी रातों तक मारी गप्पें पोस्टमैन बहनोई के साथ
चार दम के बाद पहली रात मन्दिर के बरामदे में
दूसरी "बादीपाला" "हरिबेल" हल्ले में
तींसरी रात बतियाते रहे फसल के बारे में
अब लौट रहे हो धूप के पेट पर टायर चप्पल थपथपाते

किस गांव में गुड़ पानी पी दम लेगा
तुझे भूकेंगे देखकर देशी कुत्ते
महाराज, गोसाईं, भगत जैसे शब्दों के बाज
चोंच मारेंगे तेरे कान में, गांव की सहुआइन
तेरा गंजेड़ी विकृत चेहरा देख मुंह फेर लेगी
स्टाकमेन की नन्हीं बिटिया कंकड़ से
बीड़ी खुंचे तेरे कान का साधेगी निशाना
धूप की चायं-चायं पिआनोवी रीड

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दबाते आते समय तेरे
सरदारजी काठगोदाम वाले ट्रक पर बिठाएगा नहीं
गरियाएगा तू गैर उड़ियों को
'स्साले' गुस्से से 'बसुधैव कुटुम्बकम' की बढ़ी रीढ़ को
कच्च् से तोड़ देगा।

(२)

कब लौटे
बड़े नाती के पोलिओ पैर देख वर्दाश्त कर सके तो
फटी साड़ी के नीचे अल्सर पेट में बेटी
छठा स्वाक्षर लिए आ खड़ी हुई बर्दाश्त कर सके न !
उसकी निर्लज्ज ननद छुपा ले गयी तेरा दिया कटहल
लौट चल, अगर इच्छा है इमली की उसे
तो भेज देना कुल्हाड़ी वाले डाकिए के हाथ
तू मत आना इस ऋतु में, बहुत जल्द डूब जाता है सूरज
रक्ताक्त गाय की हड्डियां ले लकड़बग्घा
घूमता है ब्लाक आफिस के पीछे, झुरमुटों में।
इस बिजली के उजाले के नीचे तीखे ऊन कांटे
गोरी उंगलियों की धार में
लाल स्वेटर के लिए झलमलाते हैं
तू अंधा हो जाएगा, आगे चल

खद्दर बनियाइन की जेब में हाथ डाल
ठंड झेल ले दो दांतों की किट-किट के बीच
दबा कर आम का पत्ता, बस चार मील की पगडण्डी पर बढ़ता चल
याद रख, कभी न आना इस ऋतु में फिर
देख तो वह मोटर साइकिल की बत्ती
शिकार से लौट रहे हैं हमारे जमींदार-पूत
अंग्रेज बीबी के साथ
चवन्नी की पकौड़ी बांधे गमछे में
चल तेज डग भर कर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(३)

कब लौटे···
बड़े भाई के कलेजा जलाऊ नंगे सीमेंटी शहर से
ट्यूबरक्लोसिस जीवाणुओं के नृत्य से भीगी चिथी कथरी
एक शब्द संग एक खांसी सुन सका तो
बड़ी भतीजी के साथ किसी लकड़ी के पटे पर
बैठे सनिमा देख आए
जर्मनी के कारखाने
चिमनियों को घेरे रहता है कांच का फिल्टरी वैभव
न्यूजरील के बाद आंखें भीग आयीं भतीजी की
ऐसा होता हमारे देश में तो खांस खांस खांस
उसके बाप की बनियाइन न चिथड़ती ।
कैसे बहुरेगा गांव को
वर्षा से फूले-फूले बादामी बाल नदियों के
टपटपाती बूंदों की करेले-पात-सी निखरी आंखें
तेरी जुकाम-प्लावित नाक, मसूड़े और छोटे हो जाएंगे ।
तेरी छोटी बछिआ की आने-जाने की राह में
घास बढ़ चुकी, डगर पहचान नहीं
सर्द जंगल के बीच वपुवंत कोई

तीस ग्लास गरम शर्बत चायं चायं पी गया
कब लौटोगे···
छोटे बेटे की फीस माफी की अर्जी में
कांपते अंगूठे की छाप लगाते जाना ।

(४)

कब लौटे···
लाखों पताकाओं की गगनचुंबी कसरत
जमीन से दिन सब बह जाएं हाथ उठाऊं "हांजी" स्रोत में
नीले किरोसिन बोतल में
क्या धुरी के कें-कें शोर मर जाता है
गुंरु, मंदाक्रांत सब दूसरी चीजों के देखते
रात-भर ओस पीकर पेट फुलाया तेरी जनम माटी ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीमार बीबी के काठ बक्से की
शेष तह में वही सफेद कागज
अक्षर न पहचान पाए काले साइन बोर्ड झूलते शहरी रास्ते में
पूछना अमुक बाबू से
हां हां हां हां
हजारों लौट आएंगे जिज्ञासा के लिए
वहीं, ठीक वहीं साढ़े तीन हाथ जमीन फाड़
कभी किसी दिन सो जाना।

कुनमुन को

तेरे आ जाने के बाद
छत पर टपरटपर हंसी के ओले गिरे
झूला झूला बीच के कमरे में,
खुल गये प्लास्टिक-खिलौने के बॉब बाल
पंख लगे मिठाइयों के
उड़ चलीं चुपचाप आत्मीय स्वजनों
शुभेच्छुओं के पेट में।

वंशवृक्ष की जड़ भी
वृक्षायित आटोप में
नरमाई से देखने लगी पानी, हवा और आलोक को।
नन्हें दो हाथों के सहारे
उठ आया अभिशप्त पितृत्व, पुत्र नरक से
नि:संग कंपन से
दो अभिषिक्त आत्माओं में
बाजार सजा किलकारियों का
बिछौने के बीच।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रात दो बजे
नीरवित खेल मैदान की ओर लपकते
तेरे चारों हाथ-पांव
हिलाडुला कर उठा देते हैं इस कुंभकर्ण को
तृतीय विश्वयुद्ध का सायरन
कान के पास गरजने पर भी
पलकें न खोल रहा यह आलस्य पितृत्व
खाए हिचकोरे
तेरे रुदन कांटे की स्नेहल चुभन से।

यूं तो सौजन्यता लोभी तुझे देखते ही
टटोलने लगे जेबें
मानो स्नेह की कसौटी हो
वह छुपा कागज ही
पर खुली मुट्ठी में
कुछ भी तो रखा नहीं तुमने।
किस सौंदर्यशास्त्र का आद्य प्रणेता है तू
सुडौल अभीप्सा से हटा दिया
पूंजी की निष्प्रभ प्रार्थना को।

शोरूम की नन्हीं-सी पोषाक देखकर
ललचा उठता है तेरी मां का मन
काजल-डिबिया की ओर झपटती है अनामिका
तेरे सुडौल बिज्ञापन के नगाड़े बज उठने पर
सार्थकित होगी यह देह,
मन और पितृत्व का गुंजरण।

मेरे गंभीर प्रश्वास के आहिस्ते-आहिस्ते
क्षीण होते समय
तेरे सीने में हांफता श्वांस, तोड़ता होगा
वृक्षलताओं को,
मेरी नस-नस में रक्त के वेगवान प्रवाह के
धीरे-धीरे नम होते समय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding By IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे शरीर में घनीभूत हो रहा होगा
रुधिर का उत्ताल सागर।

मेरा संकीर्ण व्यक्तित्व
अपसृयमान, ढूंढ रहा होगा एक सुरंग
घने अंधेरे में दिखाई न देता होगा चेहरे को चेहरा
बह आती होगी तूफानी हवा चारों ओर से
प्रकंपित होती होगी धरती
वासुकी के थम् चोट से।
मेरे बेटे ! धीर से उबार लेना
चुटकी भर उजाले में, झिलमिलाता चम्मच भर
रुपहले जल में, देख लूंगा जान्हवी को
मन भरकर तब तेरी ही मुट्ठी में।

बांस काटने वाले को

बांस काटने वाले को क्या पता
किसे कहते हैं सबडिवीजन
या सदर मुहकमा
किसके इशारों पर चलता है देश
कौन है या कि फिर महासचिव
भगवे कपड़े से क्षितिज के उस पार
सूरज के गुम हो जाने तक
उसे दिन का मुहर लगाते-लगाते
कस रक्षा होता है वह
जो मालिक कहाता है।

हंसिया, कटार और बांस के जंगल के
चमड़े छिल जाने के बीच
अटपटाता हुआ
नींद से उठा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके उनींदे शरीर को।
हाँ, सामने है जख्मी भविष्यत
कुछ एक बेलौस बदकिस्मतों का
सम्मिलित हमला, पीछे की ओर
चार साला नन्हा-सा बच्चा खड़ा
तक रहा होता है
पिता के लौट आने की राह
हाथ में एक चमचमाता कागज का पन्ना
मिशनरी साहब ने पकड़ा दिया है
संतुलित आहार की सूची
हांलाकि जबड़े और मसूड़ों से घावों का रिसाव
अब तक नहीं सूख पाया
न दरदरे जैसे चमड़े की
पपड़ाहट ही रुकी।

पता नहीं कब किस पल
भटकता आ टपकेगा कोई रीछ
या आदमखोर चीता
बांस के पत्तों से छन-छन कर
जाते-जाते एक दिन जो देखता है तो
दिमाग गर्म, बारह हाथ लंबा विषैला तक्षक एक
डोलता आ रहा है
उसकी गरदन के ऐन समीप।

दिन-भर क्रिकेट का धारा विवरण
रवि शास्त्री के चौके और छक्के
इमराज, गावास्कर के अवसरकालीन
मंतव्यों से पिण्ड छुड़ा
है कौन बच्चा जो करेगा पसंद
सुनने को उसके दुःसाहसिक अभियान की दास्तान
कौन-सा अखबार छापेगा
विस्मयकारी रूप से बच निकले
उसकी प्राण-रक्षा की खबर!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खाकी पोषाक पहने
जंगली हाकिम ने
किसी तरह उजाड़ा
मुट्ठी भर भात के ढेर से सजी
उसकी सुहानी सल्तनत को ।
इक्कीस रुपयों वाली कुल्हाड़ी को
जब्तनामा के कौन से फर्द पर
लिखा गया, अंगूठा लगाने के बाद
मुट्ठी भर भूरे केशों पर
अंगूठा का चकलासा स्याह निशान
पोंछते हुए निस्पृह, उदास
झोंपड़ी को लौटने के दृश्य को सहेज कर
रखा किस दूरदर्शन के
आलोक संगम ने !

बांस काटने वाले को क्या पता
छोटे से इतने बड़े होने पर भी
न उसे पता है अपनी उम्र
न जवानी के अपवाद
छत्तीसगढ़ी बिरमानी के साथ
रातोंरात फरार हो जाने का अभ्रांत विवरण ।
न कोई इतिहासकार
सहेज कर रखेगा उसे चालू साल की
खास खबरों की किसी हेडलाइन पर ।

बांस काटने वाले को आखिर अब तक
क्या मिला है ढूंढ़ कर,
किसलिए आया है वह इस दुनियां में
उसके खुद के आने का मतलब भी आखिर
क्या पता है उसे ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नींद

झरोखे से बहती आ रही है हवा
चिंदी भर उजाला
आसमानी धूप के सांचे में
खड़ा हो जाता है खपरैल की दरार से
फर्स तक, टॉर्च लाइट से
मुक्त हुए उजाले की लकीर की भांति
चमकदार खंभा एक,
पर पुलकित होता नहीं वह आदमी ।

देर से बिस्तर छोड़ने वाले उस आदमी ने
कभी भी नहीं जाना
भोर की हवा का शीतल आलिंगन,
खिलती उषा की हरित काकलि,
बाल सूर्य का स्वर्णिम हाथ—
पहनायी नहीं है
निद्रासक्त मनुष्य को उजली एक धोती,
सोया है कि सोया है वह
खप्-खप् लांघते जाएं
उसकी अवश देह को
सुबह के नृत्य-प्रवीण प्राणी
भींच कर खा जाएं उसकी गहन निद्रा को
क्योंकर इतना सोया है आज भी वह ।

वह डर गया न
यथार्थ पृथ्वी के आसन्न अंकुश से
अखबार से मकान मालिक, दूध वाले तक
दरवाजे पर दस्तक देकर
लौट चुके हैं कब से
घरवाली भी पुकार लगा चुकी है कई बार
जेब टटोल चुका है कई बार
मेट्रिक पास बेटा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi.Digitized by eGangotri Funding by MoE-IKS-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फॉर्म भराई की रकम के लिए।
क्यों भी वह उठ नहीं रहा
गृहस्वामी की तलाश में और कब तक
चलती रहेगी कानाफूसी,
घर के सामने
घरेलू मामलों के केन्द्रबिन्दु पर
कौन है और उसके सिवाय
अन्त में एक दस्तक देने वाले से
साफ-साफ सुना दी घरवाली को
सचमुच की नींद होती न
तो उठ चुके होते कब से।

कृष्ण पक्ष

मेरी हड्डियों पर से झड़ रहे थे मांस के खोल
इसलिए अंधेरे दिन में, क्रमशः मेरी उम्र की
हिफाजत लेने वालों ने पहनाई काली तावीज
काले जंतर झूल रहे थे बच्चों के गले में
अंधेरे में चल रही थी रेल, लेन-देन
पर्व-उत्सव, कृष्णपक्ष दशहरे में आयी थी एक नारी
मौज से कुछ दिन बिताने बाप के शिविर में
उसकी आंखों में झलकी थी वट की टहनियां
प्रमोद-उद्यान, सिटी-बजाकर स्तनाग्र में
ठूंसने के लिए बच्चे का मुंह, धूं-धूं शब्दों का

रोल उठा जब, कारखाना, कल-कब्जे
चिमनियों के शिविर से, पहचाना भी न
जा सका उसके प्राणेश्वर को
काला पड़ रहा था अधजला यंत्र-संस्कृति में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमने तब नयी पोषाकों में भर दिया पूरी देह को
सुनने देश के नेताओं को, रंगाली हथेलियों में
नए किस्म की तालियां
फिर भी जाना वृक्षों ने पहले से
की नहीं थी इच्छा गूंथे जाने की
हररंगी सूत की गांठों में
नदी ने भी न की इच्छा
अंजुरी में धोने को नेता के चरण
सप्तरंग से हो विभाषित
मछलियां मुकर गयीं अपने वायदों से
कि बंध जाएंगी नदी तट के सूक्ष्म तोरण में।

आश्चर्य है मुझे
कैसे यहां कुछेक मनुष्य बदल जाते हैं निर्जीव चिंगटों में
तले जाते हैं कड़ाई में, मसालों और सुस्वादु व्यंजन में
बदलते खाद्यों में दूसरों के
साबुत निगल जाते हैं कई राक्षस
जो थोड़े से तैरते हैं संसार-समुद्र में
है उनके लिए रत्ती भर चारा,
बड़ा-सा अंकुड़ा एक अतल जल में।
बेशर्म काली लहरें छातियां फुलाए इतराती हैं
नुकीला अंकुड़ा एक कलेजे में गाड़े
चुभा कर जकड़ ले समस्त शिशुओं को।

कृषक संगीत

पहले ही से जोती गयी भूमि पर
मुट्ठी-मुट्ठी धान बोते समय
छीन लिये गये होते तो
आपत्ति कोई उठती ही नहीं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं, वैसा नहीं है
चोरनी भदोई हवा
सहला देगी फसल के हरे बाल
लंगोटी पहनी बच्ची
कटोरी भर थीर[1] से पहुंचती होगी
गांव की सीमा तक, आकाश भर
सूर्य का चक्षूष्मान इशारा
तमाखू थोड़ी-सी मुंह में डाल
छिप जा रहा होगा अनाम एक पक्षी
एकड़ भर के सब्ज फाग में।

पकने के कायदे से अभिषिक्त
पीताभ साम्राज्य को, आंखों-आंखों से तुरही फूंक
संवर्धित करेंगे नंगे बच्चों के झुंड
चहकेगी सोने की औटी पुकार
अदृश्य आलोक से थिरकेगी
कादों-भरी राह, कुटिया से होगा चंपत
भूख-भय का जलातंक।

बाद में मर्म तले
नन्हा बम एक रख देगा
जल्लाद का नृशंस हाथ
फूटने पर मेद, मांस, अस्थि एकाकार
बिखर जाएंगे, आसपास नरम मांस के चना-नुमा
टुकड़े, पग बढ़ाता चलेगा
आग्नेय तूफान खेत भर में
हुत्-हुत् रागिणी से
संजीवित होगा मही-मंडल।

बेटी के हाथ से फिसल जाएगा
चवनिया साबुन घाट में

---

१. बासी भात में डाला गया पानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'कहां है साबुन···साबुन कहां है'
मां की चपत से बह जाएगी पलकों के किनारे
अनछिपे आंसू की धारा।
बेटे के हाथ से खिसक जाएगी पढ़ने की किताब
मिट जाएगा विद्यालय के प्रांगण से
पदचिह्न, ठक-ठक गाय गोठ से
सपाट लगुड़ और
कैशोर की रोजी

पहले ही कर्षित पृथ्वी में
ढेर-ढेर मनुष्यों को रोपते समय
पकाकर नष्ट कर दिये होते तो
न होता क्या ?

फिल्मी गीत

इक्कीस साल पहले का फिल्मी गीत
कहीं कोई बज उठने पर
दीख जाती उस समय की
तरुणी पृथ्वी और उसकी देह में
दहक उठने वाली उस समय की
वह धूलों भरी राह
घर-द्वार, मेघ-मल्हार या
वर्षा-फुहार की पहली सीत्कार।

मुकुलित उड़ान भर
खिसक रहे मेघखण्ड की
ज्योति मुग्ध इशारा आज कहां
शीत के झरते-न-झरते
लटक गयी भोर अलस्सुबह
साइकिल पर जाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by MoE-IKS-NME-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वल्पाविष्कृत किशोरी की
वेणी-धार से उन्मोचित वक्षोदय के
संगीत के बीच भंवर में घूमती
उसकी स्निग्ध दहकन।

एक गीत की मादकता
जो भी क्यों न हो
झपट लाती है हवेली के बीच
उन क्षणों की ढेर सारी स्मृतियां
जहां कपोत के डैने, आम के बौर
स्कूल से लौटते कुछ लड़के
और दिशाहारा स्वप्न की
रंगीन लहर माला में
नहाता हुआ एक वीरान प्रहर

वे नहीं हारते
भीतिप्रद हैजे और
फिल्टर पानी की दमक-चमक से
फिल्मी गीत के सारांश को
तर्कसम्मत कर परोसते कुछ लोग
हमने क्या सोचा था कि
इस तरह कभी आलू, प्याज और
वेतन-वृद्धि की चमक में
ढकेल देंगे अपने को
सांसारिक पवित्र स्तोत्र में
कल गान के भर्राए रिकॉर्ड की भांति
रटते चले जाएंगे आहार, निद्रा और
मैथुन की निमित्त शैली को।

इतने सालों के फिल्मी गीतों से
रंग नहीं उखड़ा है जरा भी
और ना ही महक की एक बूंद
ढेर हरीतिमा में आर्द्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है उसने मेरे
पिता के मानस को, आज वही दायरा
मेरे पुत्र की शैशव चेतना को
फिर भी वह
उस कलगाने और भोंपूयंत्र का मुंह
बूढ़ा होने को आया है कब से
और बच्चे कब से तोड़ चुके हैं
उसकी स्पर्धित शाखाओं को।
गीत के आंकड़ों में फंसी हुई
रह गयी है उसकी लहर, बादल
और उसी के बीच एक पल की तारा।

इतनी ही समयहीनता के बाहर
किसके बाल पके नहीं हैं
फिल्मी गीत के उस सुरकार से लेकर
किताब बेचने वाले तक।

माया त्रिवेणी

(१)

दो सौ छः टुकड़े हड्डी
बखानते वह गुप्त कथा थोड़े-से धन की
दिनोंदिन शक्तिह्रास
टूटी-फूटी हिंदी के सहारे
ढूंढना होता है तब इस उस गांव में
लालटेन जल रही होती धूल-भरे बरामदे में
भेंगा बेटा फूंकता होता दशहरी गुब्बार
सीख रही है मालती साड़ी पहनना सातवीं कक्षा से
मदरसे में चबाते मूंगफली कहते हैं मास्टर जी
बैलों को ढूंढे खातिर जाना है रे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिवार आएगा छः मील दूर ससुराल से
पकड़ लेता है इमली की सोंटी आज्ञाधीन छात्र
एक ही सोंट से बढ़ जाती है गाड़ी की रफ्तार
भूल जाता है छोटा बच्चा
अंग्रेजी परीक्षा के समय
चपत और मरोड़े कान के रंग को।

उस शहर का है बहुत भय
दरियाई घोड़ा, जेब्रा और कबूतर-दार बंदूक दिखाकर
चीनी युवती जाती है खिसक ठूंस कर मुट्ठी भर नोट ब्लाउस में
निर्जला मुंह में नाचे बीड़ा पान
सीमेंट की बांबियों के भीतर है "हैलो" का जाप
चप्पल उतार एक भद्र-पुरुष
दस पैसे देकर जान लेते अपना वजन
फिर एक सुविस्तृत भाग्यफल
हेडमास्टर के बेटे-जैसा यहां कोई घूमता नहीं है
साइकल के अन्दर घुमाए हाफपैंटी जांघ।

तुम हो किसी सुनहरी झील का घूंट-भर मीठा जल
पढ़ लेते हो महाशून्य में तेजष्क्रिय बम के संलाप
नृतत्व पढ़ाकू दल परिचित कंकाल ग्राहक
यहां रहकर हमारी दुधारी निःश्वास
सलामत रखे
उस हवा से गिर जाएं
माया त्रिवेणी के गले तक के जल में
रक्षा करो गोपन में
छाती का निरोम संत्रास।

(२)

तू जन्म लेगा इसलिए
चार साल पहले का कोई अदृश्य संकेत
खींच लाया था मुझे इस पृथ्वी पर···त्रेपन ईस्वी में
मार्गशीर्ष की अन्तिम द्वादशी के दिन
पिताजी स्कूल से लौटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवार पर बेंत टिकाई
चॉक की सफेदी धोई हथेली से
तीर में प्रसरित संवाद की भांति
मेरे रुदन का मर्मानुवाद हुआ
"बाबूजी ! मैं तो आ गया !!"
मां के थमाए खिलौने फेंक दिए
खुले हाथ में रहा कुछ भी नहीं
जच्चाघर में हवा ने कहा—फिसफिस
बड़े होने पर मुझे पहचानोगे, पहचानोगे भाई
मिचमिचाती आंखें फैला कर ज्योतिषी ने कहा—
"इसके पास पैसे रहेंगे नहीं, मास्टर जी !
पिताजी के 'कोठरी की चाभी' के बारे में पूछने पर
आज भी उत्तर देता हूं—ताला नहीं खरीदा।

सभी मुहल्लों के भात-विक्रेता
पारी-पारी से मुझे जीवित रखेंगे
कटोरी में उंडेली लाल चाय में नींबू निचोड़कर
दादा जी कब्र फाड़कर कहेंगे—
इसी नुस्खे से मेरा जुकाम छूटा
याद रख।
दिन-भर उपवास रहकर
छोटी बहन के कांपते हाथ से दूब आएगा
मेरे सिर पर
अरुआ चावल वालों में छिपकर
मेरी आयु बढ़ाएंगे
उसके दिए बनियाइन टावेल पहन
कूद पड़ूंगा शरत ऋतु के
किसी आतप ताप तापित तनु ताप
स्वच्छ जलधारा में।

तेरी शारीरिक स्तब्धता ने
खोंस दी है सिर-भर में
तीखी चिंता की परमाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विच्छुरित हो रहा है मेरा अदृश्य रुदन
ओड़िशा के हर गांव-गंवई में
बावन पत्तों के ताश की फेंटाई में
अमराइयों की वायवीय लीला में
ठायं से फट पड़ते अंडी के बीज के
नैसर्गिक संगम में।

डर जाने वाला आदमी

डर जाने वाले आदमी का
अपना कुछ होता भी है
यहां तक कि अपना कहलाने वाला
घरबार, गाय-गोरू, पलंग, कुत्ता
एक-एक धमकी भर से खुल जाते हैं
उसकी मुट्ठी से।
वृत्तायित सुविशाल धमकी के अन्दर
रोक लिया जाता है उसके
आने वाले दिन के लहरायित सपनों को।
लाल क्रॉस में निपीड़ित उसकी भविष्यत
पदोन्नति या तनखाह की बढ़ोत्तरी का
शंखनाद और सुनाई न देता
उसके निर्भय प्रतिवाद के प्रत्युत्तर में।

डर जाने वाले आदमी के
आटे दाल के संसार को
झुलाए रखते हैं शून्य क्षितिज पर
बन्हिमान पौरुषदीप्त कुछ एक
थोड़ी-सी मर्जी के खिलाफ हो तो
और संभलता ही नहीं गुस्सा
प्रतिपत्तिशालियों का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर जाने वाले आदमी का
कोई जीवन भी होता है क्या
थरथर कांपते कानों में
शंका-रहित पत्नी की
निर्भय वाणी के अलावा ।

सलबटों से भरी एक धोती के
हवा में उड़ कर फड़फड़
कांपते समय
स्त्रीदार साड़ी एक
अपनी ही जगह रहकर
अपनी ताकत ही को पटक कर
सहेज कर रख लेती है ।

डर जाने वाले आदमी का
कोई संसार भी होता है क्या ?

तिथि

सब खतम हो चुका है
लकड़ी ढोने वाले जंगली लोग
लौट चुके हैं ईंट बनाने वाले मजदूर
हाथ-पैर धोकर चले गये, बालू ढोने वाले
ट्रक का ड्राइवर भी निबटा चुका है काम
सिवाय रंग पोतने वाले आखिरी कारीगर के
जिसने फेंका नहीं है अपने बड़े-से ब्रुश को
बक्से में ।

सब पूरा हो चुका है
आस-पड़ोस के लोग कब से तैयार बैठें हैं
बच्चे टपकाने लगे हैं लार मिठाई के लिए
जरीदार मुकट चमकने लगा है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chennai and eGangotri Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नानी मां हलदी कूटकर लार टपकाने लगी है
पावने में मिलने वाली साड़ी के लिए
मिर्च की बुकनी से घायल छोटी काकी
सूजी हुई आंखों से रूठ चुकी है कई बार
मां झांक कर ऐनक के अन्दर से
परख चुकी है बनवाए गये
तमाम गहनों को ।

पता नहीं, ये आतुर सोने के गहने
मेरी छोटी बहन के हाथों के कुंकुम के बूंदें
मेरे छोटे भाई की प्यार भरी "भाभी" की पुकार
और बूढ़े बाबूजी की अंतिमतम अभिलाषा
तुम्हारे नर्म हाथों की एक कप चाय
हां, कब आ रही हो तुम ?

तुम्हारे पदरजों से निष्क्रांत हो विलखती
मेरे आंगन की सघ माटी की गोद को
मेरे दोपहर के भोजन की अन्तिम मनुहार
अचार के टुकड़े को
धूलि धूसरित दौरे के बाद
"इस्स···छि:' भावावेश से वटन खोलने को
तुम कब उतर आओगी ?
कब ?

कुंजवन

ताल-तमाल से घिरे प्रलुब्ध अरण्य की
पुकार भी यहां कहां से सुनाई देगी
मुंड़ी धरती की चहुं ओर केवल
हाय-हाय आतंकराज का विगुल
यहां प्रेमी-प्रेमिका नजर आएंगे पूरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यंग्य और उलाहनों की नरक-भूमि में
चकरा जाएगा उनका प्रेमाप्लुत बाजार
खदेड़ी हुई आएंगी पदावलियां यहां
इस शून्य बेसब्र जीवन के अंतराल में
कुंजवन के जादुई सपने
सम्राट तक को भी है अगोचर
औटाए सोने की छूरी की भांति दिखने वाली
प्रेमिका के निकट आ जाने के बाद
फीकी नजर आना सहज साध्य हो चुका है ।

यहां कुंजवन में है केवल कीड़ों मकड़ों का
अयाचित प्रादुर्भाव,
पत्ते, शाख, कोंपलों में पुष्पवती न हो पाने के कारण
रासायनिक लेप
अलड्रीन और उस तरह की कीटनाशी दवाइयों के
ज्वालामय आविर्भाव से जलते जा रहे हैं
कीड़ों-मकड़ों के महीन हाथ-पैर ।
कोयला खदान के शक्त बुलडोजर
उड़ती-भटकती हवा से पूछो
यहां प्रेमिका की आंखों से झरते आंसू की बूंदों के
अग्रभाग में है किस संत्रासी हाथ की साजिश
छद्मवेशी प्रकृति की या काले-काले दानेदार
अनाथ कोयले की ।

बचपन

ढीली होकर खिसक चुकी
यादें कुछ तीखी धूप में ही
झिलमिलाती है, पहना देती है मन को
बेशुमार तारों की मेखला, दुरंत स्नेह की
ढिबरी धुक धुकाकर जलते समय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी का बरामदा कनाखियों से देखता है
अपनी रोनी आंखों से
अब के मोजाइक चट्टान को
वहां घने कदलीवन में उड़ते घूम रहा
चमगादड़ एक दिन शाम को
बसेरे से निकल थककर
झूला झूलने लगा लालटेन के आलोक-वृत्त में
चक्कर काट उत्पाती उम्र की औद्धत्य दिखा
मां की साड़ी छूते-न-छूते फिर
काठ-रेलिंग के भीतर सांय से
अपनी देह घुसाकर गायब हुआ
किसी घनी बरगद डाल के
तिमिराछन्न साम्राज्य की ओर ।
वहां छिपकर था
यायावर शबर का शब्द-भेदी सुदर्शन-सा
धारदार बर्छा एक
वह आई मिट्टी पर गर्म रक्त-धार
छलक गयी मिट्टी के आंचल से
रक्त-मांस और तड़पते टूटे डैने का
घनफल एक, हां, ठीक वही
विस्तारित था मेरा सुलोचन बचपन
यहां-वहां खटमल एक
आड़ में छिपा चूस रहा था
रक्त-सा मेरा । विपन्न अदालत के
चतु:कोण में वही-पत्र की अदृश्य चूसन
टुकड़खोर प्रतिष्ठा के सिहरित वर्ग-कोष्टक में
बिलबिलाती मेरे यौवन की शाश्वत प्रार्थना
मेरे पास चारा और क्या था ?
मुंह पर मूंछ उगने की प्रतिनियत
विचारधारा पर कीचड़ फेंकने की अकल का
क्या होता है मायने ?
सिर झुका मैंने स्वीकार किया
अतीत को लावारिश कर देने के गोपन
मंत्र का, बर्फीली चोटी पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कदम-कदम बढ़ते बेधड़क शेरपा की तरह
मेरी आंख नाक कान मुंह पर
चढ़ आया यौवन की रंगतूलिका लिए
न छोड़ने वाला
चित्रकार एक ।
हृदय पर विलीन होते
अपने शैशवजनित सूर्यास्त की
अंतिम रश्मि को वापिस पाने की संभावना
न होने पर भी अपने चारों ओर छोटे
कैरमबोर्ड, नन्हे जूते, बेबी सूट
और तीन चक्कों वाली साइकिल में
औंटाते सूर्योदय की झलक
निहार-निहार मैं
सिहर उठा हूं आज फिर एक बार
अपने विलपित सूर्य के
पुनर्गमन से ।

बेटा

प्रतिज्ञा मैंने दी
आलोकशून्य अंचल में भी
पहचान लूंगा उसे मैं
आंख कान नाक के स्पर्श द्वारा
भूल होती है अगर
तौलूंगा नापूंगा सुई की नोंक बराबर आलोक-बिन्दु
भिक्षुक के नरम-कंठ-सी
उसके स्वर की पुकार
विद्युत तरंग लिए
घेर गयी मेरी श्रवणेंद्रियों को
और आलोक की क्या है आवश्यकता
उसके मुंह से झरते शब्द

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुलझरियों की कौंध लिये
आलोकित करेंगे मेरे चैतन्य के
दिग्वलय।

केवल उसकी तलाश के स्वप्नों को
बसाने की तैयारी है मेरी योजना स्मित
सुबह-सांझ
जो नहीं जानती
बाह्य पृथ्वी का सुख-दुख
पड़ोसी बच्चों-कच्चों के चिथड़े
या फिर खिलौने का टूटा सिर
अपनी-अपनी सीमित स्थिति में
हथेलियों के गोले-बारूद से
पहरा दे रहा है असबाब बिछौना चादर
अपने घर के सामने की थोड़ी-सी बरसात में
कौन समझता है बाकी घरों के सामने के
घूं-घूं करते सूखा-पीड़ित
धूल के निष्ठुर ब्रह्मांड को
यूं तो
असहिष्णु पवन झकोरा जान-बूझकर
बंद कर चुका
आना-जाना
फिर भी पहचान ली
बेटे की देह-गंध
किसी ने गाली दी इस अवक्षय
हीन प्रलोभित संसार के
गप्प से लील लेने के
आसुरी रूप को
मैं छटपटाया
रक्ताक्त क्षत-विक्षत दिखा
मेरी असुन्दर देह के लिए
किसी कंठ से सुनाई नहीं दे रही
आह्···च्च्···च्य्···
फाहा-बैंडेज हाथ में लिये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसने फेर दी अपनी नन्हीं उंगलियों से
थोड़ी-सी मरहम,
मेरा समय प्रभावित था केवल
आज उसी की गंध से।

अपसारण

किसी को अपना बना लेने जैसी
चातुर्योक्ति गायब हो रही है मेरी
दिन-ब-दिन, जिम्नासियम करते-से कथोपकथन
हार मान रहा है
सीधा-सादा मुट्ठी-भर भात
एक लंगोटी और आखिरी समय पांच हाथ
मसृण भूमि छोड़कर
बाकी की प्रयोजनीयता पर जंग लगने पर
सुदूर को फेंकने के सिवाय
और फिकर करने का क्या मतलब ?
निकांचन पल्ली रास्ते कभी नहीं कहेंगे—
मुझ पर तुम चले।
आकाश के नित्य आभासित सूक्ष्म सौंदर्य को
कोई हटा नहीं सकेगा मेरी दो आंखों द्वारा
नियंत्रित साम्राज्य से, मेरे गोरे पांव की छोटी उंगली को
चूमते नित्य प्रसारित कुम्हड़े की लता को
कोई अलग नहीं कर सकेगा
बाएं हाथ की बज्र दलाली की
मेरी फिर परवाह क्या ?
अपने बंधक पड़े विवेक को छुड़ाने की
अपेक्षा करनी होगी फिर
और कुछ वर्ष, फिर बस !
कोई हाथ पकड़कर जबर्दस्ती कुर्सी में बैठाकर
ठूंस नहीं सकेगा कान में उलूक उपाख्यान-से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपच उच्चालय के वक्तव्य सब
झरेंगे नहीं बाढ़ की तरह
अकबकाकर मारने टुकड़े अस्तव्यस्त निर्देशों के
कराघात से रक्ताक्त नहीं होगी मेरी कोमल
आत्मा की पीठ, मेरी विचित्र प्रकृति से
बिलबिलाकर बितायेंगे नहीं साढ़े-छह घंटे
मेरे आधीनस्थ, निर्वाक् अंधकूपमयता में
जो हो खत्म नहीं हो रही जिन्दगी
विरक्ति के शूलवन में हवाई फायर
ठांय-ठांय होते समय दिख जाती है
चारों ओर दृष्टि यथारुचि आदमी की भीड़
केतु राहु शनि का डेरा
हर ओर दिखते हो मनुष्य/अमानुष/दयालु
जल्लाद परोपकारी ईर्ष्यावंत ढेर-ढेर
अवांछित शक्ति-स्नेह-राह नहीं छोड़ेंगे बाट-अबाट
के दरवाजे पर ताला डालकर बिलबिलाया
एक ब्रह्मराक्षस जिसने लीलने का दायित्व लिया है
इस सचराचर विश्व-ब्रह्मांड को।
इधर फैल रही है आग हरे मैदान में
तैर रहे हैं बालू के स्तूप खलिहानों में
टपक रही हैं धवल शंखचील अमानुषिक शरक्षेपण में
झर रही है शिशुओं की निर्द्वन्द्व देह
मां की गोद से, अस्पताल के बरामदों में
अंटी लेकिन खाली नहीं रहती
नये-नये स्वर फूट रहे हैं
उषा की कबरी के नीचे से, भोर की चट्टान से।

साक्षात के दिन

जान-पहचान होगी शिशिर की गोद में हमारी
नहीं देखेगा बिलकुल कोई मेरा थर्राता मन और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्पूर्ण आदर, तुम्हें पढ़ूंगा सिर्फ एकाग्र चित से
कनिष्ठांगुलि का ऐसा भाग्योदय
होते पण के न होते भी साहस करूंगा तुम्हारे शरीर को
झाड़-झूड़ अपनी प्रतिष्ठा के फटे गमछे से
चल-फिर सकूंगा फिर तुम्हारी स्नेहार्द्रता के वल से
अंकों में चालाकी से हमारे जोड़ को
सौ बार कसता रहूंगा नील स्लेट से ।
काफ्ता के डैने में खोदकर दो नाम
उड़ाने पर दस मील ऊपर किसी आकाश के मुंह पर
या फिर इस परिसर मजूर के फंदे से
छिप-छिपकर जाने पर गुप्त सुरंग में
पीठ में लटकाए मुट्ठी-भर खाने की चीज
तारकसी कामज्वाला की छाती में लपेटे
सौ-सौ वर्ष पार होते रहेंगे हम
मिट्टी, कादो खान हीरे फलांगने के बहाने ।
क्रमशः उम्र बीते हड्डियों में नगाड़े पीटते
छिप-छिप खेल रहा था जब इस देह में कोमल मयूर
आहिस्ते-आहिस्ते मोटी होती है मुंह की क्षीण भाषा जब
दंतुरित गालों पर नंगर डाले
कोई आयु का जीवाणु
मैं कुत्सित दिख जाऊं शायद किसी विपन्न सुबह
सभी के षड्यंत्र दांतों रोमकूपों की फांकों में
मक्खी उड़ेगी नहीं खाने की भात की थाली से मेरी
टूटी क्रीज की मेरी पोषाक सीधी न होगी कभी
सैकड़ों चेष्टाओं से ।
चश्मा हाथ थाम ले जाओगी कहीं शाल अरण्य में
बल्कल पहना पत्तों का मुकुट सजाकर
कच्चे मांस का लोथ ठूंस मेरे मुंह में
मेरा अंधत्व कहेगा नहीं आग के रंग
प्राक् जीवन में हम किसी दिन लौटेंगे निष्ठुर ढंग से ।
जान-पहचान होगी हमारी हेमन्त की सुबह
उससे पहले पहचान चुका होऊंगा तुम्हें मैं लाखों बार
अपने भीतर

अपनी देह में अपने स्नायु अपने रक्त में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीन्हते समय अगर जुबान लटपटाए कागज के टुकड़े पर
अपना ही नाम लिख बढ़ाऊंगा
अपने हाथ तुम्हारी ओर
है मिलने की न जाने कितने आलोक वर्षों की दूरी आह
उन हाथों की तुम्हारे हाथों से ।

गणतंत्र

उस धूसर पल्ली की उचाट गोद में
कभी-कभी टपकते हैं अतिथि कुछ
नितांत ऊबड़-खाबड़ के बीच
जाने की राह गुम हो चुकी होती है
गिरते-पड़ते पहुंचते अभ्यागत दल
विमर्ष ढूंढ़ने लगते हैं
बूंद-भर पीने का पानी
बैठने को कोई बरामदा
और शाम काटने
चिथे तास की गड्डी
उसी बेढंगी बस्ती का रास्ता पूछ-पूछकर
झपट आती हैं कुछ जीपें
पांच साल में कभी-कभार
फेंकती है हैंडबिलों की गड्डियां
मलिन काले ग्रामवासियों की
न्यून देह गोंद लगे पोस्टरों से पट जाती है
माटी की दीवारों पर तैर आती हैं भारी आवाजें
जीप भीतर से लाउड स्पीकर की मार्फत
उस अंधेरी बस्ती की दोनों आंखों को
झुलसा देगा बिजली का बल्ब
गंदे मिट्टी ढेलों को
भीगो देगा
नलकूप का बेहिसाब जल, घनीभूत होगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वाक्षर का आज्ञा महोत्सव
उछलते आते हैं वादों के रेले
छलांगते गांववासियों के कर्ण-स्तूपों की ओर ।
इस लावारिस पल्ली के पालन के लिए
इस बार आया है आगे
स्वाक्षरित कृतित्व के साथ
एक बोर्ड मेंबर
गणतंत्री दिवा संगम लिए
क्वां-क्वां का स्वर फूट सकता है
अभी या अगले कुछ क्षणों में।

तुम्हारे लिए

तुम्हें देखा नहीं बहुत दिनों से
हमेशा लगता है अभी आओगी तुम
पांवों की संक्षिप्त गति मन के कुरलते स्नेह
फीके रंग की ओढ़नी से दीपित
आकर तुम माप रही होगी मेरे
स्पंदित हृत्पिंड के शून्य कमरे को
हवा में उड़ रहे होंगे केश तुम्हारे
आकाश की भीगी छाती पर उभरेगी आभा तुम्हारी
आसपास अपहुंच मेरे हाथों की किंचित दूरी पर
खड़ी होगी तुम कोने में मुंह के लेकर
ऊष्म हंसी की बाढ़ जिसके जल से धुल-धुल कर
पुंछ जाएगा मेरी देह का कलुषित पाप-
संकेत, दिखूंगा उज्ज्वल मैं कुछ पवित्र उच्चारणों से
मेरी नाक के नीचे से जो झरेगा पुण्योतय
निश्वास का निर्झर अगरबत्ती की तरह
तुम जब जल उठोगी सार होगा महकना ही
मेरे आसपास के अभिशप्त खंड मंडल के लिए
तुम्हारे और मेरे विभेदस्वरूपा आंचल में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहते-बसते कुछ नागरिक उग्रवादी
हैरतअंगेज हमलों के चलते
देने लगे हैं चुनौती जंग के लिए
अपने-अपने अंतस में जोरों से
छिड़ गई लड़ाई, धक्कमधक्का
बंदूक की नालों से चलने लगी
हवा के अंधड़-सी दनदनाती गोलियां
ढूंढ-ढूंढ़ कर मौत के घाट उतारने लगे
इकलौतों को बलात्कारित
होने लगीं कोमलांगी नारियां
मुट्ठी-भर ताजा खून और
आंसू की अविरल धार से भीग गईं
धरती की गर्म छाती, टूटे
सैकड़ों साल से चलते आए अंतरंग
खिलौनों के पतले-दुबले हाथ-पांव
कितनों को बिलखाने लगे अकुलाकर
सीने में छिपे परत-दर-परत शोग के सामान
कुछ समझ में नहीं आता लक्ष्य-भ्रष्ट कुछ
उन पागलों की भीड़ के चलते
न जाने कितने अबाबीलों के झुंड
मंडराते रहते हैं आकाश पर
जवां मांस के लोथड़ों से पेट की आग
अनायास बुझा लेने के बाद

उनकी भाग्यरेखाओं के तट पर
हजारों उजाले झिलमिलाते हैं
समझ में आती गिद्ध पालने की नीति कमोवेश
जब जारी होता है सरकारी फाइलों से फरमान
ऐसा कौन-सा अपराध
कर डाला था तोते और फाख्ते के साथ हल्दी वसंत ने
खुली निर्मल सांस ढूंढने के लिए
वे लांघेंगे जरूर देश की सीमा पार की दहलीज
अभागिन कोई तोड़ रही होगी जिस समय
किसी नदी तट पर अपनी पापग्रस्त कंगन और चूड़ियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवसादग्रस्त कपोलों से पोंछती हुई
चुटकी-भर सिंदूर

यह कैसी ठांव है, सभी कोनों से
झर-झर तमाम आंसू एकात्म वेग से
बह जाते हैं और उस सोते से
घुल-मिल जाती है तुम्हारी-हमारी सभी की
सयापा की धार, शोक गीत
उमड़ती रहती है कवियों की कलम से
नैवेद्य, मिट्टी कंकड़ झाड़-झंखाड़
सचराचर टप्-टप् वर्षा झरती है न्यारी
उन जलज असुओं में रोने का धर्म केवल
इस धरती के पृष्ठबंध में शाश्वत का संकेत है
रोते-रोते दिख जाती है अनायास
एक हंसी से डोलती विद्युत-रेखा
और उस महीन-सी रेखा के लिए प्रतीक्षा
करना भी असंभव नहीं हमारे लिए
गिनते हुए मास, वर्ष और न जाने
कितने-कितने संवत्सर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant